पुष्करमूल की खेती

सामान्य नाम	:	पुष्करमूल
वानस्पतिक नाम	:	इनुला रेसीमोसा
कुल	:	एसटरियेसी
उपयोगी भाग	:	जड़ और प्रकन्द।
सामान्य उपयोग	:	पौधा खुशबूदार, ज्वरनाशक और कफोत्सारक, उत्तेजक रोधी, वाताहर, मूत्रावर्धक और प्रतिरोधी प्रकृति वाला होता है। जड़ो का प्रयोग श्वसन नली और अन्य फेफड़ों में संक्रमण तथा गठिया की बीमारी के लिए किया जाता है।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार

कमरा न. 309, **तृतीय तल, आयुष भवन, बी ब्लॉक, जी.पी.ओ. काम्पलेक्स,**
आई.एन.ए., नई दिल्ली – 110023
दूरभाष: 011-24651825 | **फैक्स** : 011-24651827
ईमेल : info-nmpb@nic.in | **वैबसाईट** : www.nmpb.nic.in

नोटः– कृषि प्रौद्योगिकी का विकास एस.के. यूनिवर्सिटी ऑफ ऐग्रीकलचरल सांइस एण्ड टेक्नोलॉजी, श्रीनगर, जम्मू तथा कश्मीर।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार

पुष्करमूल

इनुला रेसीमोसा
कुलःएसटरियेसी

- पुष्करमूल मजबूत बारहमासी/झाड़ीनुमा तथा 1.5 मीटर लम्बी खशबूदार जड़ व प्रकन्द युक्त पौधा है।
- पत्तियाँ ऊपर से रुखी और नीचे से घने बालों वाली अंडाकार और भाले के आकार वाली होती है।

जलवायु और मिट्टीः

- शीतोष्ण और हिमालयी बुग्याल में 1500 –4200 मीटर (समुद्र तल से ऊँचाई) क्षेत्र में पाया जाता है।
- चिकनी दोमट मिट्टी और घूप वाली जगह फसल के लिए उपयुक्त होती है।

रोपण सामग्रीः

- बीज और प्रकन्द
- बीजों के माध्यम से पौध तैयार करना उचित माना जाता है।

नर्सरी विधि

पौध तैयार करनाः

- नवम्बर या मार्च के शुरु में ही बीजों के माध्यम से ही पौध को उत्पन्न किया जा सकता है।
- 50 दिनों के भीतर ही अंकुरण पूर्ण हो जाता है।

पौध दर और पूर्व उपचारः

- एक हेक्टयर भूमि के लिए 1 किलोग्राम बीज प्रर्याप्त होते हैं, जिनसे 40000 पौधों को उत्पन्न किया जा सकता है।
- जीए$_3$ की चिकित्सा बीज के अंकुरण को सफल बनाने में मदद करती है।

खेत में रोपण

भूमि की तैयारी और उर्वरक प्रयोगः

- मिट्टी को ढीला करते हुए धीमे से भूमि को जोतना चाहिए।
- जैविक खाद या पशु खाद को 15 टन/हेक्टेयर की मात्रा में मिलाना चाहिए।

पौधारोपण और अनुकूलतम दूरी

- पूर्व मानसून की अवधि के दौरान फसल को प्रकन्द के माध्यम से उगाया जाता है।
- पौधों के बीच में 30 सेमी X 30 सेमी की दूरी को रखना सर्वोत्तम माना गया है, जिसमें प्रतिहेक्टयर/1,100 प्रकन्द खंडों की आवश्कता होती है।
- प्रकन्दों को अंकुरण होने में 15–20 दिनों का समय लगता है।

आरोपण और पर्याप्त स्थानः

- दो महीने पुराने पौध को मुख्य खेत में 50 सेमी X 50 सेमी की दूरी पर प्रत्यारोपित किया जाता है।
- एक हेक्टयर में 40,000 पौधों का समायोजित किया जा सकता है।

अंतर फसल प्रणालीः

- यह पौधा एकल फसल के रूप में उगाया जाता है।

सिंचाईः

- तीन से चार सप्ताह के अंतराल में हल्की सिंचाई करना पर्याप्त होता है।

फसल प्रबंधन

फसल पकाना और कटाईः

- एक अथवा डेढ़ वर्ष के उपरान्त अक्तुबर–नवम्बर में फसल को काटा जाता है।
- मिट्टी को गीला करके जड़ों को खोदना चाहिए।

कटाई पश्चात् प्रबन्धन

- जड़ों को साफ करके मिट्टी के कणों को हटाया जाता है।
- जड़ को काटा जाता है और सूखाकर इसको हवा बंद डिब्बों में भरा जाता है।
- प्रकन्द और जड़ो को तनों से अलग करके रखा जाना चाहिए तथा इनको छाया में सुखाना चाहिए।

पैदावार

- एक तथा डेढ़ वर्ष के उपरान्त प्रति हेक्टयर 8 टन के लगभग सुखी जड़ें प्राप्त की जा सकती हैं।